जीवन के हर आयाम का आध्यात्मिकरण है गांधी का सूत्र- डॉ. उल्हास जाजू

हिंदी विश्वविद्यालय में गांधी जयंती समारोह

वर्धा दि. 2 अक्तूबर 2015: गांधी एक व्यक्ति नहीं अपितु विचार है। जीवन के हर आयाम का आध्यात्मिकरण गांधी के जीवन का सूत्र है। हमें उनके विचारों की

लडाई रास्तों पर नहीं बल्कि घर-घर से लडनी होगी। इस आशय के विचार जाने-माने गांधी विचारक तथा महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम के सुप्रसिद्ध डॉ. उल्हास जाजू ने व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित समारोह में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की।

समारोह में प्रतिकुलपति प्रो.चित्तरंजन मिश्र, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र तथा विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी मंचासीन थे। प्रात: 6.30 बजे गांधी हिल पर आयोजित समारोह में डॉ. जाजू ने गांधी जी के जीवन और कार्यों पर प्रकाश ड़ालते हुए आज के समय में उनके विचार की प्रासंगिकता पर विस्तार से अपना मंतव्य दिया।

उन्होंने कहा कि व्यवस्था परिवर्तन का संघर्ष गांधी विचार की मूल में है। गांधी जी ने समग्रता का मंत्र हमें दिया था। सामाजिक जीवन में व्रतबद्धता गांधी के जीवन और कार्यों से झलकती है। उनकी विचारधारा से हमें विकास एवं नये समाज के निर्माण की लड़ाई लडनी चाहिए।

अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि तंत्र और बाजारवादी व्यवस्था के चलते विकराल विकास हुआ है। गांधी इस प्रकार के विकास का विरोध करते थे। इससे मनुष्यता को खतरे पैदा हुए हैं और पूरी मनुष्यता बलिवेदी पर चढ़ी है। मूल्यों के प्रति भी प्रतिबद्धता कम हुई है। जीवन के लिए आवश्यक शिक्षा लुप्त होती जात रही है। ऐसे में गांधी विचार ही हमें नया मार्ग दिखा सकता है। उन्होंने कहा कि किसी भी प्रकार के विकास और प्रगति का लक्ष्य समाज होना चाहिए व्यक्ति नहीं। हम संकल्प लेकर आगे बढ़ेंगे तो गांधी जी की जीवन दृष्टि का समाज स्थापित कर सकेंगे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों ने गांधी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभिवादन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने किया। उन्होंने विषय प्रवेश

करते हुए कहा कि गांधी जी के अहिंसा और सत्य के विचार को आगे बढ़ाने के लिए हमें युवाओं में उनके विचारों का बीजारोपण करना चाहिए। गांधी व्यक्ति न होकर विचार बनेगा तो देश और समाज उन्नति की ओर अग्रसर होगा।
समारोह में वरिष्ठ अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

जीवनाच्या प्रत्येक पैलूंचे आध्यात्मिकरण हेच गांधींचे सूत्र- डॉ. उल्हास जाजू
हिंदी विश्वविद्यालयात गांधी जयंती समारोह

वर्धा दि. 2 ऑक्टोबर 2015: गांधी एक व्यक्ती नसून एक विचार होय. जीवनाच्या प्रत्येक पैलूंचे आध्यात्मिकरण हेच गांधींच्या जीवनाचे सूत्र होय. त्यांच्या विचारांची लढाई रस्त्यावर नव्हे तर घरा-घरातून लढवावी लागेल. असे स्पष्ट प्रतिपादन गांधी चिंतक तथा महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्था, सेवाग्राम येथील सुप्रसिद्ध डॉ. उल्हास जाजू यांनी केले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयात गांधी जयंतीनिमित्त आयोजित कार्यक्रमात मुख्य वक्ता म्हणून संबोधित होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी कुलगुरु प्रो. गिरीश्वर मिश्र होते. कार्यक्रमात प्रकुलगुरु प्रो.चित्तरंजन मिश्र, कुलसचिव डॉ. राजेंद्र प्रसाद मिश्र तथा विकास व शांती अध्ययन विभागाचे प्रमुख डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी मंचावर उपस्थित होते.

सकाळी 6.30 वाजता गांधी हिल वर आयोजित कार्यक्रमाता डॉ. जाजू यांनी गांधीजींच्या जीवन आणि कार्यांवर प्रकाश टाकत आजच्या काळात त्यांच्या विचारांनी प्रासंगिकता यावर विस्ताराने आपले मत मांडले. ते म्हणाले की व्यवस्था परिवर्तनाचा संघर्ष गांधी विचाराच्या मूळाशी आहे. गांधीजींनी आम्हाला समग्रतेचा मंत्र दिला होता. सामाजिक जीवनात व्रतबद्धता आली पाहिजे असे ते मानत असत. त्यांच्या विचारधारेतून आम्हाला विकास आणि नव- समाजाच्या स्थापनेची लढाई लढली पाहिजे असे आवाहन ही डॉ. जाजू यांनी आपल्या भाषणातून केले.

अध्यक्षीया भाषणात प्रो. गिरीश्वर मिश्र म्हणाले की तंत्र आणि बाजारवादी व्यवस्थेमुळे विकासाचे विक्राळ रूप पुढे येत आहे. गांधींजी अशा विकासाचे विरोधक होते. मनुष्यता धोक्यात आणणारा विकास होत असतांना मूल्यांप्रति दायित्वांचा अभाव निर्माण होत चालला आहे. ते म्हणाले की कोणत्याही प्रकारचा विकास आणि प्रगतीचे अंतिम ध्येय येथील समाजच असला पाहिजे आणि गांधी विचारांची धुरा वाहिली तर असा विकास सहज शक्य होईल.

कार्यक्रमाच्या प्रारंभी उपस्थितांनी गांधीजींच्या प्रतिमेला माल्यार्पण करून अभिवादन केले. कार्यक्रमाचे संचालन डॉ. नृपेंद्र प्रसाद मोदी यांनी केले. यावेळी वरिष्ठ अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी आणि विद्यार्थी मोठया संख्येने हजर होते.